समकालीन हिंदी साहित्य विविध विमर्श

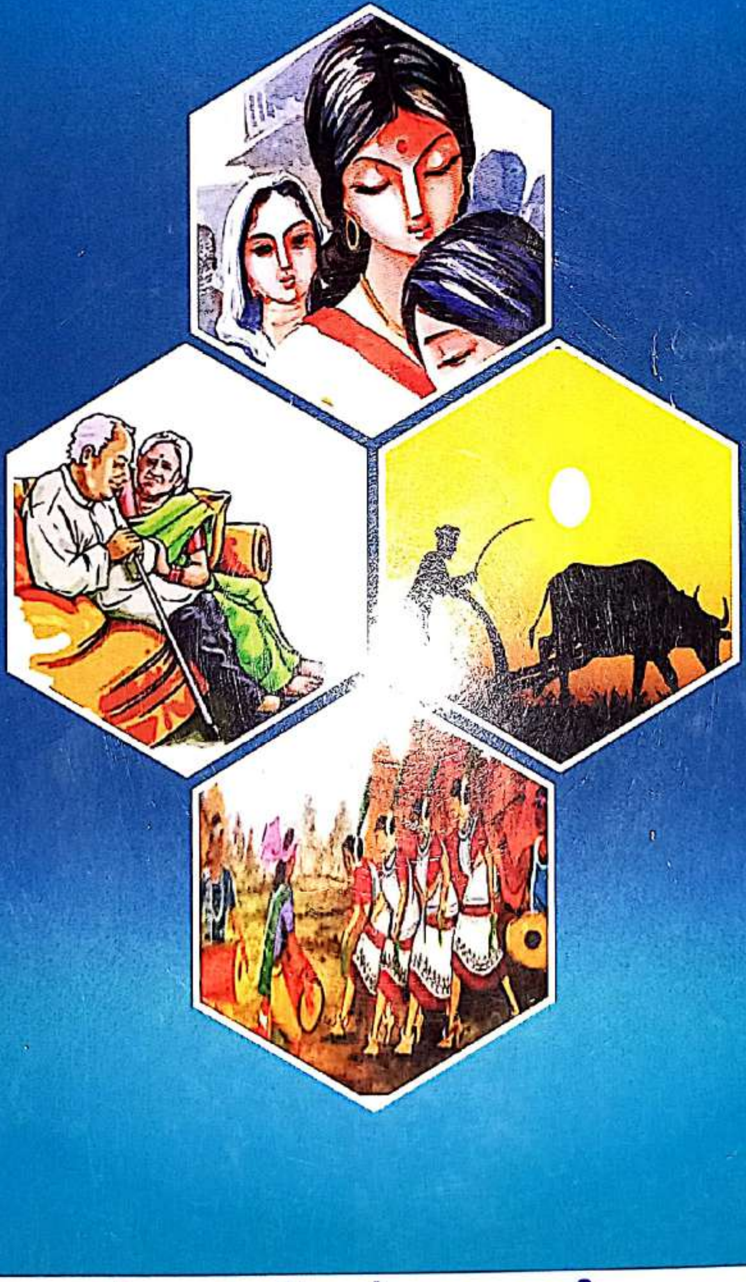

संपादक : डॉ. वसंतकुमार माळी

Scanned with OKEN Scanner

वसंत माळी

समकालीन हिंदी साहित्य : विविध विमर्श

सं. डॉ. वसंतकुमार माळी

अक्षरा पब्लिकेशन्स

Scanned with OKEN Scanner

25.डॉ विवेकी राय का रिपोर्ताज 'जुलूस रूका है' 144
में किसान विमर्श **–प्रा.डॉ. संतोश सांडू घल्डे**

26.हिंदी दलित साहित्य में वास्तववाद का भविष्यवेध 152
–प्रा.डॉ. मनोज नामदेव पाटील

27.मन्नूभंडारी की कहानियों में स्त्री विमर्श 157
–प्रा.डॉ.प्रीति एस. सोनी

28.गीतांजलि श्री की कहानियों में नारी विमर्श 164
–प्रा.डॉ.राजाराम बाबुराव तायडे

29.अनामिका का कहानियों में नारी विमर्श 173
–प्रा.डॉ.गिरीष एस. कोळी

30.पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा :किन्नर वर्ग की 179
मुखर आवाज **–प्रा.डॉ. सरला दवंडे –दापके**

31.'पिंजरे में पन्ना' उपन्यास में आदिवासी विमर्श 183
–प्रा.डॉ.जितेंद्र मच्छिंद्र पवार

32.सुनीता जैन की कविताओं में नारी विमर्श 186
–प्रा.डॉ. प्रियंका जगदीश महाजन

33.ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना 191
–प्रा.डॉ.नितीन गायकवाड

34. हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त आदिवासी विमर्श 197
–अमोल पाचपोळे

35.'तीसरी ताली' में चित्रित थर्ड जेंडर की समस्याएँ 204
–काजल

Scanned with OKEN Scanner

33

ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना

प्रा.डॉ.नितीन गायकवाड

स्ताविक

भारत में दलित चेतना के प्रचार – प्रसार में हिंन्दी दलित साहित्यकारों ा सबसे अधिक योगदान देखने को मिलता है। हिन्दी साहित्य में दलित मर्श प्रथमतः साठोत्तरी दशक के बाद देखने को मिलता है । पिछले तीस ीस साल में इस साहित्य ने अपना अहम योगदान दिया है । साहित्य में ा विभिन्न तरह के विमर्श देखने को मिलते है। नारी विमर्श भी हिंन्दी ाहित्य में बहुत चर्चित विषय रहा है । लेकिन संत साहित्य के बाद केवल लेत अंदोलन ऐसा है, जिसने साहित्य और विमर्श की जमीन को पुरी तरह दलकर रख दिया । दलित साहित्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बौध्द ाहित्य समग्र सम्यक क्रान्ति के दलित अंदोलन का प्रारंभिक स्वरूप स्पष्ट रता है ।

जोतिबा फुले, शाहु महाराज, पेरियार, स्वामी रामानंद नायर आदि ने छडे वर्ग के समाज को सुधारणे का काम किया है। इन सारे समाजसुधार ों के कारण ही दिन दलित समाज मे क्रान्ति का संचार हुआ। महाराष्ट्र में ोतिबा फुले के बाद महान दलित चिन्तक डॉ.भीमराव अम्बेडकर का उदय सी पृष्टभुमि की देन थी। अच्छी शिक्षा प्राप्ति के बाद डॉ.अम्बेडकर ने 'दलित मुक्ति अंदोलन' चलाने का संकल्प लिया। हिन्दू धर्म की कमियों के खिलाफ हमेशा वे संघर्ष करते रहे। डॉ.अम्बेडकरने हिन्दू धर्म की विभिन्न रूढियों और अन्ध परंपराओ को उखाड फेकने के लिए अपनी कलम चलायी और भारत ही नही पुर्ण विश्वभर मे अपनी विद्वत्ता की पहचान करायी। समाज में जो नेचकुरीतिया थी उन परंपराओ को जड से मिटाने का काम डॉ. भीमराव अम्बेडकर इन्होंने किया।

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी साहित्य में दलित चेतना

हिन्दी साहित्य में विभिन्न प्रकार के विमर्श को हम पढते आ रहे है, उनमे से दलित विमर्श भी काफी चर्चित विषय है । स्वतंत्र्यता के बाद जहाँ एक ओर स्वतंत्र्य भारत की गुंज उठ रही थी उसी समय दूसरी ओर एक ऐसा वर्ग था जिनकी ओर किसी का लक्ष नही था। तभी विभिन्न समाज सुधारको समाज का ध्यान इन दिन–दलित समाज की ओ केंद्रीत करणे का काम हुआ। विभिन्न प्रकार के साहित्य लेखन इस विषय पर होने लगा। दलित जीवन और उनकी समस्याओं पर गैर दलित जैसे प्रेमचन्द, नागार्जुन, अमृतलाल नागर, गिरिराज किशोर, जगदीश चंन्द्र आदि ने दलितों की समस्याओं पर लिखा । लेकिन दलितों के मुल प्रश्नों के बारे में दलित लेखक जीतना प्रभावि ढंग से चित्रण करता है उसके मुकाबलें अन्य साहित्यकार नहीं कर पाता । इसका मुल कारण यह है कि दलित साहित्यकार उस समस्याओं को अनुभव करता है । उस त्रासदी से वह गूजरता है । इस कारण वह खुद के अनुभव या अपने समाज के जिवन का यथार्थ चित्रण कर पाता है ।

हिन्दी साहित्य में ओमप्रकाश बाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय आदि साहित्यकारों का विशेष स्थान है। ऐसे विभिन्न साहित्याकों ने दलित साहित्य में अपना योगदान दिया है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकी के साहित्य मे दलित चेतना

हिन्दी दलित साहित्यकारों में ओमप्रकाश वाल्मीकि बहुत चर्चित माने जाते है। ओमप्रकाशजी ने अपने साहित्य में सदियों से चली आ रही असवर्णो के प्रति सवर्णो के मन की भावना में परिवर्तन का प्रयास किया है वही समाज में निच कही जानेवाली अछुत जातियों में सचेतनता सृष्टी एवं प्राचिन अंधविश्वास, सुसंस्कार आदि हटाकर एक आदर्श सुसंस्कृत समाज निर्माण का सपना देखा । ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने लेखन के जरीए समाज मे फैले अंधविश्वास अन्याय – अत्याचार, शोषण आदि का घोर विरोध किया है । अपने विभिन्न साहित्यीक विधा के जरीए समाज में सचेतना उत्पन्न करणे का प्रयास किया। इतनाही नहीं नाट्य कंपनियो के जरिए नाटक खेल कर जाति भेद वर्ग भेद हटाने का प्रयास किया।

ओमप्रकाश वाल्मीकि का यह मानना है कि दलित युवकों मे अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष की आवश्यकता है । पर वे संघर्ष किये बिना जाति छुपा कर समाज में सम्मान पाने के लिए प्रयत्नशिल है । युवा समाज के इस प्रकार की मनोवृत्ति हीन मान्यता का परिचायक है । ओमप्रकाश जी

Scanned with OKEN Scanner

अपने आत्मकथा में अपने परिवार अपनी जाति का निःसंकोच सबकुछ वर्णन किया है ताकि इसका प्रभाव आनेवाले पीढियों पर पडे।

'सदियों का सलाम, घुसपैठिए कथा संग्रह, दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र मुख्य धारा और दलित साहित्य, सफाई देवता सामाजिक अध्ययन,' दलित साहित्य अनुभव संघर्ष और यथार्थ आदि ओमप्रकाशजी का चर्चित साहित्य है । इसके अतिरिक्त 'दर्द के दस्तावेज ' , उत्तर हिमानी , दलित चेतना यह उनकी कविताएँ है।

'जाति' को उन्होंने भारतीय समाज व्यवस्था का महत्वपुर्ण घटक माना है। व्यक्ति पैदा होते ही जाति व्यक्ति की नियति तय कर देती है। वे कहते है ''बचपन से लेकर आजतक न जाने कितने दंश – जिसम पर ही नही, मन पर भी चुभें है। इस घृणा –द्वेश के पीछे कौन से ऐतिहासिक कारण है,जब – जब भी व्यवस्था को आदर्श मानने वाले और हिन्दूत्व पर गर्व करणेवाले से पुछा तो सिधा उत्तर देने के बजाए बात को अक्सर टाला जाता है या नाराज हो जाते है । ज्ञान की बडी – बडी बाते कहेंगे। लेकिन इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करेंगे कि आदमी को जन्म के आधार पर मानविय मुल्यों से वंचित रखना किसी भी तरह न्याय संगत नहीं है। सवर्णो के मन मे कई प्रकार के पूर्वाग्रह हैं जो आपसी संबंधो को महान नही होने देते।''[1] इससे ओमप्रकाशजी के जीवनानुभव और दलितो के उध्दार के लिए समर्पित भावना का परिचय मिलता है।

'जूठन' सामाजिक सडांध को उजागर करनेवाले, दलित साहित्य को हम देखते है। यह ओमप्रकाशजी की अत्यंत प्रभावशाली रचना देखी जा सकती है। ओमप्रकाश जन्म से लेकर अंत तक दलित जीवन की त्रासदी के साथ अनवरत संघर्ष करते रहे । वे पारिवारीक, सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक समस्याओ से जुझते हुए अंत तक जाति के कटघरे से मुक्त नही हो सके। 'जुठन' में लेखक का पारिवारिक जीवन, परिवेश, पढाई की समस्या, गांव मे भंगी चमार जैसे दलितों की त्रासद सामाजिक, आर्थिक स्थिति सवर्णो से उनका शोषण, अन्याय – अत्याचार, दलितो में सदियो से चल रहे अंधविश्वास, अस्था की कमी, आत्मसचेतना की कमी, आपसी फूट तथा स्वास्थ समाज निर्माण आदि बातों का इस कथानक मे जीक हुआ है। ओमप्रकाशजी ने अपनी आत्मकथा जूठन के माध्यम से समाज में फैली जाति – प्रथा, छुआछूत, शोषण, उँच–नीच की खाई और अनेक कुरीतियों के ऐसे मार्मिक वर्णन किये है। जिसमें सामाजिक स्तर में बहुत बडा आलोडन उत्पन्न हुआ है और समाज को बहुत कुछ सोचने समझने पर विवष कर दिया है।

Scanned with OKEN Scanner

ओमप्रकाशजी अपने अनुभव को लिखते हुए कहते है कि "इन अनुभवों को लिखने में कई प्रकार के खतरे थे। एक लंबी जद्दोजहद के बाद मैंने सिलसलेवार लिखना शुरू किया। तमाम कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताडनाओं को एक बार फिर जीना पडा, उस दौरान गहरी मानसिक यातनाएँ मैंने भोगी। स्वयं को परत दर परत उधेडते हुए कई बार लगा कितना दुःखदायी है यह सब ! कुछ लोगों को यह अविश्वसनीय और अतिरंजना पूर्ण लगता है।"[2]

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने साहित्य सृजन का प्रारम्भ कविता से किया था। "ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'भय' कहाणी काबिले जिक्र है । यह काहानी वर्ण और वर्ग के अन्तविरोधों को बडी बारीकी से उघ्दाटित कर देती है । यहाँ दलितों की समस्या का एक विशिष्ट आयाम मौजूद है। वह यह है कि एक ओर मझोले नौकरी पेशावर्ग की कृत्रिम सम्भ्रान्तता है। यह सम्भ्रान्तता की ग्रंथि इतनी प्रबल हो जाती है कि व्यक्ति वर्ण को लेकर अतिरिक्त रूप से सजग हो जाता है और उँची जातियों से मिलने वाले अपमान के कारण यह भी नहीं कि वह वर्गीय छुपाना चाहता है। इसका अर्थ यह भी नहीं कि वह वर्गीय पहचान से जुडना चाहता है बल्कि एक मिथ्या चेतना से मुक्त होकर वह दूसरी मिथ्या चेतना से जुड जाती है। दूसरी ओर अपनी जाति के रीति–रिवाज प्रेत की तरह उसके पीछे लगे रहते है। ' भय' कहानी का दिनेश इन्हीं अन्तर्विरोध की गिरफ्त में कसमसाता रहता है । उसे माई मदारन की पूजा के लिये सुअर के बच्चे का ताजा मांस भी चाहिए और उसे इस बात का भय भी है कि कहीं पडौसी ब्राम्हण को उसकि जाति का पता न चल जाए । कथानक की निरीक्षण झामला अद्भूत है, 'भय' के अतिरिक्त उनकी 'ग्रहण' 'बैल की खाल', 'कहां जाए सतीश' और कुचक्र' आदि दलित चेतना की अद्भूत कहानियां है, जो उनके 'सलाम' तथा 'घुसपैठिये' कहाणी संग्रहो में संकलित है। 'सफाई देवता' भी उनका एक अन्य महत्वपूर्ण कथा संग्रह है।"[2] 'सफाई देवता ' भी उनका एक अन्य महत्वपुर्ण कथा संग्रह है।" उनकी कहानियों पर टिप्पणी करते हुए प्रतिष्ठित दलित लेखक 'कवल भारती' ने लिखा है। "हालांकि अनुभूतियों का सर्वाधिक विस्तार उनकी आत्मकथा 'जूठन' से मिली पर सत्य यह है कि अनुभूतियों का सर्वाधिक विस्तार उनकी कहानियों में हुआ हैं। उन्होंने नई कहानी के दौर में दलित कहानी की रचना करके नई कहानी के अलम्बरदारों को यह बताया कि नई कहानी में व्यक्ति की अपेक्षा समाज तो अस्तित्व में है पर दलित समाज उसमें भी मौजुद नहीं है। 'सलाम ' पच्चीस चौका डेढ सौ,' रिहाई 'सपना' 'बेल की खाल', ' मै

Scanned with OKEN Scanner

ब्राम्हण नही हूँ, गौहत्या' इन कहानियों के माध्यम से यह बताया कि यथार्थ में नई कहानी वह नहीं है जिसे राजेंन्द्र यादव और कमलेश्वर लिख रहे थें बल्कि वह है जिसमें हाशिये का समाज अपने सवालों के साथ मौजूद है।"[3]

चूल्हा मिट्टी का
मिट्टी तालाब की
तालाब ठाकुर का
भूख रोटी की
रोटी बाजरे की,
बाजरा खेत का
खेत ठाकुर का
बैल ठाकुर का
हल ठाकुर का
हल की मूठ पर हथेली अपनी
फसल ठाकुर की
कुंआ ठाकुर का
खेत – खलिहान ठाकुर के
गली – मुहल्ले ठाकुर के "[4]

ओमप्रकाशजी की यह कविता न सिर्फ किसी उच्च वर्गीय ठाकुर को संबोधित करता है बल्की यह उस पूरे ब्राम्हणवादी, जातिवादी, सामंतवादी लोगों का पूरे व्यवस्था पर कब्जा है और बेचारें गरिब हल चलानेवाले के को पर सारा बोझ है और मलाई कोई ओर खा रहा है यही असलियत कवि अपनी कविता के माध्यम से पाठको को समझाना चाहते है।

शोधसार :

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का संपुर्ण साहित्य दलित लोकजीवन की त्रासदी को उजागर करता है । उनकी हर एक कृति यह बया करती है कि भारतीय समाज व्यवस्था में प्राचीन समय से आज तक किसि विशिष्ठ वर्ग के समाज को केवल घृणा एवं त्रासदी का शिकार बनना पडा समयानुसार इसमें थोडा बहुत परिवर्तन आया है परंतु आज भी दिन दलितो पर किसी न किसी कारण वश अन्याय अत्याचार जारी है । भले ही कानुनी तौर पर इसपर रोक लाने का प्रयास किया जा रहा हो फिर भी जितना जाति, धर्म, वर्ण व्यवस्था में जो बदलाव आना चाहीए उतना आया नही आज भी समाज में कुछ ऐसी मानसिकता वाले लोग है जो दिन दलितों के प्रति

Scanned with OKEN Scanner

घृणा भरी नजर से देखते है। समयानुसार इस सोच में परिवर्तन आना जरूरी है तभी जाकर हमारा देश एक सुत्र में बँधेगा।

संदर्भ

1.'जूठन' लेखक की ओर से पृ.9–10

2. शब्द की अग्नियात्रा का शिल्प : ओमप्रकाश वाल्मीकि, संपादक सिध्दार्थ /इमामुद्दिन,(वेबसाइट www.forwardpress.com)

3.ओमप्रकाश वाल्मीकि – न्याय की घोषणा के कवि आमिर विद्यार्थी, शोध छात्र नई दिल्ली (वेबसाइट – www.khatokitabat.com)

4.वही

• • •

Scanned with OKEN Scanner